Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095

विद्यापतिक गीतमे रसक विविध रूपक परीक्षण

राजीव कुमार झा
शोधार्थी
पूणियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ

Article Info
Volume 6, Issue 3
Page Number : 55-61

Publication Issue :
May-June-2023

Article History
Accepted : 01 June 2023
Published : 12 June 2023

रस आ गुणकेँ काव्यक आत्मा मानल जाइत अछि। रसक महत्ता सर्वोपरि अछि। रसक अर्थ होइत अछि आनंद। एकर तात्पर्य ई अछि जे जाहि रचनाकेँ पढ़ि आनंदक प्राप्ति होअय, वैह काव्य थिक। नाट्यशास्त्रक प्रणेता आचार्य भरत मुनि अपन प्रसिद्ध ग्रंथमे लिखने छथि– "विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगद्रस–निस्पत्तिः"[1]

मोनक विचार भाव कहबैत अछि। हृदयमे वासना प्रेम, क्रोध आदिक रूपमे रहयबाला भाव स्थायीभाव कहबैत अछि। ई भाव सभ मोनमे सुतल रहैत अछि मुदा अनुकूल अवसर भेटतहिं, ओ अनायासे जागि जाइत अछि। जखन कोनो स्त्रीकेँ मनोनुकूल पुरुष वा कोनो पुरुषकेँ मनोनुकूल स्त्री भेटि जाइत छथि, तखन ओकरा प्रति आकर्षण भाव जागैत अछि। इयह आकर्षण प्रेम कहबैत अछि। एहिना ककरो मोनक प्रतिकूल आचरण करयबाला व्यक्ति प्रति ओकरा क्रोध उत्पन्न होइत अछि अर्थात जखन धरि मोनक अनुकूल वा प्रतिकूल व्यक्ति नहि भेटैत अछि, तखन धरि नहि तँ प्रेम उत्पन्न होइत अछि आ नहि क्रोध मुदा ई भाव मनुष्यक हृदयमे जन्मसँ ल' क' मृत्यु धरि वर्तमान रहैत अछि। तात्पर्य ई जे हृदयक प्रसुप्त भावकेँ जगयबाक लेल कोनो–ने–कोनो बाह्य वस्तुक आवश्यकता होइत अछि। मनुष्यक हृदयमे मुख्यतः दू प्रकारक भाव रहैत अछि–1. स्थायी आ 2. अस्थायी। जे भाव बेसी काल धरि मनुष्यक हृदयमे अवस्थित रहैत अछि, ओकरा 'स्थायी भाव' आ जे अल्प समय धरि टिकल रहैत अछि, ओकरा 'अस्थायी भाव' कहल जाइत अछि। "जे मनुष्यक स्थायी भावकेँ उद्दीप्त क' दैत अछि, विभाव कहबैत अछि।"[2]

एकर दू भेद होइत अछि– 1. आलम्बन विभाव, 2. उद्दीपन विभाव। जाहि ठाम नायक वा विषयक अवलम्बनसँ (जेना राम, सीता, शकुंतला) रसक उद्रेक होइत अछि, ओकरा आलम्बन विभाव कहल जाइत अछि अर्थात जाहि वस्तु वा व्यक्ति द्वारा ई भाव जगाओल जाइत अछि, ओकरा आलम्बन कहल जाइत अछि। आलंबनक अर्थ अछि अवलंब, आधार। जे भावक आधार भेल, जाहिपर भाव टिकल ओ ओकर आधारपर आलम्बन भेल। जँ ओ नहि रहैत तँ प्रेम वा आन स्थायी भाव कोन वस्तुपर स्थिर रहैत ? तात्पर्य ई जे प्रत्येक भावक उद्बोधनक लेल आश्रय (जाहिमे ओ भाव होअय) आ आलम्बन (जकरा प्रति ओ भाव होअय) अनिवार्य अछि मुदा भावक उद्बोधने पर्याप्त नहि अछि, ओ रसक स्थितिमे कोना पहुँचय, ताहि लेल वृद्धि (उपचय) सेहो आवश्यक अछि। जँ भाव मात्रा अंकुरणक स्थितिमे रहत तँ रसक निष्पत्ति नहि होयत। जाहि कारणसँ भावमे वृद्धि होइत अछि, ओकरा 'उद्दीपन' कहल जाइत अछि। उद्दीपनक अर्थ होइत अछि उद्दीप्त करयबाला, बढ़बयबाला। आलम्बन आ उद्दीपन दुनू विभाव कहबैत अछि। "उद्दीपन विभाव ओहन वस्तु वा स्थितिकेँ कहल जाइछ– जकरा देखि स्थायी भाव तीव्रतर वा उद्दीप्त होइत अछि। जेना– चन्द्रोदय, कोकिल, उपवन आदि।"[3]

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भाव उत्पन्न भेलापर ओहि अनुरूप होमयबाला शारीरिक चेष्टाकेँ अनुभाव कहल जाइत अछि। एकर दोसर व्युत्पत्ति सेहो अछि– अनुभव करयनिहार अर्थात जाहि चेष्टासँ भावक अनुभव होअय।

किछु भाव एहन होइत अछि जे अल्प समये धरि स्थायी रहैत अछि एहन अस्थायी भावकेँ संचारी वा व्यभिचारी भाव कहल जाइत अछि। संचारीक (सम्+चारी) अर्थ होइत अछि संचरण करयबाला आ नहि टिकयबाला। व्यभिचारी (वि+अभि+चारी)क अर्थ होइत अछि विशेष रूपसँ (अभि) चारु दिस चरण करयबाला। एकर तैंतीस प्रकार मानल गेल अछि। डॉ॰ दिनेश कुमार झाक अनुसार– "व्यभिचारी भाव स्थायी भावक विपरीत क्षणिक होइत अछि। ई स्थायी भाव सभक सहकारी रूपमे वर्त्तमान रहैत अछि। ई कोनो एके रस धरि सीमित नहि रहैत अछि। एकेटा व्यभिचारी भाव भिन्न–भिन्न रस सभमे उदय एवं अस्त गतिकेँ प्राप्त करैत रहैत अछि। ई व्यभिचारी भाव 33 प्रकारक होइत अछि–1. निर्वेद, 2. ग्लानि, 3. शंका, 4. असूया, 5. मद, 6. श्रम, 7. आलस्य, 8. दैन्य, 9. चिन्ता, 10. मोह, 11. स्मृति, 12. धैर्य, 13. कीड़ा, 14. चपलता, 15. हर्ष, 16. आवेग, 17. जड़ता, 18. गर्व, 19. विषाद, 20. औत्सुक्य, 21. निद्रा, 22. अपस्मार, 23. स्वप्न, 24, बिबोध, 25. अमर्ष, 26. अवहित्य, 27. उग्रता, 28. मति, 29. व्याधि, 30. उन्माद, 31. मरण, 32. त्रास, 33. वितर्क।"[4]

'रस' भारतीय वांगमयक एकटा अत्यन्त प्राचीन शब्द अछि जकर प्रयोग ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शतपथ ब्राह्मण, कठोपनिषद, निरूक्त, व्याकरण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथमे भेल अछि जे विभिन्न अर्थकेँ वाहन करैत अछि। दिनेश बाबू कहने छथि – "काव्यशास्त्रामे 'रस' अलौकिक एवं चमत्कारी ओहि आनन्द विशेषक बोधक अछि जकर अनुभूति सहृदयक हृदयकेँ द्रुत, मनकेँ तन्मय, हृदय व्यापारकेँ एकतान, नेत्रकेँ जलाप्लुत, शरीरकेँ पुलकित एवं वचन रचनाकेँ गदगद रखबाक क्षमता रखैत अछि। इएह आनन्द काव्य उपादेश अछि एवं एकरे जागृति वांगमयक अन्य प्रकार सभसँ विलक्षण काव्य नामक पदार्थक प्राण प्रतिष्ठा करैत अछि। जाहि प्रकारेँ आत्मज्ञानी रसरूप परमात्माक साक्षात्कारसँ कृतकृत्य भ' आनन्द विभोर भ' जाइत छथि, ओहि प्रकारेँ काव्य मर्मज्ञ सहृदय रसिक ब्रह्मानन्द सहोदर अलौकिक काव्य–रसक आस्वादन क' आत्मविभोर भ' जाइत छथि।"[5]

आचार्य भरत मुनि अपन प्रसिद्ध ग्रंथ नाट्यशास्त्रमे स्पष्ट रूपसँ कहने छथि–'नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते।"[6] अर्थात् रसक अभावमे कोनो अर्थक आविर्भूत होयब सम्भव नहि अछि। साहित्य दर्पणक रचयिता आचार्य विश्वनाथ स्पष्टतः काव्यकेँ परिभाषित करैत कहने छथि – "वाक्यं रसात्मकं काव्यम"[7] अर्थात रसात्मक वाक्य काव्य कहबैत अछि। हिनका अनुसारेँ संस्कृत काव्य–शास्त्रक अन्तिम प्रमुख आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ 'रसगंगाधरक रचयिता' सेहो रसेकेँ काव्यक आत्मा स्वीकार कयने छथि। हिनका द्वारा प्रस्तुत काव्यक परिभाषा 'रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्दःकाव्यम्'मे रसक महत्ताक स्वीकृतिक अतिरिक्त आर किछु नहि अछि।

रसक संख्या आ नामक सम्बन्धमे विद्वान लोकनिमे मतैक्य नहि अछि। डॉ॰ दिनेश कुमार झा लिखने छथि– "आचार्य भरत मुनि, जे रस सम्प्रदायक जनक छथि, अपन ग्रन्थमे मात्र चारिटा रस– शृंगार, रौद्र, वीर एवं वीभत्सक प्रमुख रूपसँ उल्लेख कयने छथि तथा एहि चारु रसो क्रमशः हास्य, करुण, अद्भूत एवं भवानक रसक उत्पत्ति मानने छथि। एकर अतिरिक्त ओ शान्त रसक निरुपण सेहो कयने छथि। सभ मिला नौ प्रकारक रसकेँ आचार्य भरतमुनि द्वारा मान्यता प्राप्त भेल अछि। आचार्य मम्मट उपर्युक्ते मतक समर्थक छथि। आचार्य विश्वनाथ दसम रस 'वात्सल्य'क निरुपण कयने छथि। रुप गोस्वामी एवं मधुसूदन सरस्वती एगारहम रस भक्तिक परिकल्याण कयने छथि। एकरो अन्तिम नहि मानल

जा सकैछ। स्वतन्त्रातापूर्वक नवीन–नवीन रसक नामकरण करबाक दिशामे एखनहुँ विद्वानलोकनि प्रयत्नशील छथि किन्तु एतबा अवश्य जे साहित्य जगतमे 'नव रस' अर्थात रसक संख्या नौ होइत अछि, एकटा रुढ़ प्रयोग जकाँ भ' गेल अछि।"[8]

आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा सेहो 9 टा स्थायीभावसँ 9 टा रसक निष्पत्ति मानैत दू टा आर रसक उल्लेख कयने छथि।

"स्थायी भाव – रस

1. रति – शृंगार
2. हास – हास्य
3. शोक – करुण
4. क्रोध – रौद्र
5. उत्साह – वीर
6. भय – भयानक
7. जुगुत्सा – बीभत्स
8. विस्मय – अद्‌भुत
9. निर्वेद – शांत

इन प्रसिद्ध रसों के अतिरिक्त दो और रस माने जाते हैं – 1. वत्सल और 2. भक्ति। भक्ति को 'उज्जवल रस' या 'मधुर रस' भी कहते हैं। वत्सल रस का स्थायीभाव है वात्सल्य और भक्ति रस का स्थायी भाव है भगवद्विषयक रति।"[9]

डॉ॰ रमण कुमार झा अपन 'भविष्णु' पोथीमे रस स्थायी भाव, गुण, सहायक रस, अनुभाव, संचारी भावक उल्लेखक संग 11 टा रसक विवरण प्रस्तुत कयने छथि।

ई आवश्यक नहि जे पूर्ण सामग्री रहले पर (स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, संचारी भाव) रसक निष्पत्ति होअय एहिमे दू वा एकोटा रहलो पर रसक–निष्पत्ति भ' सकैत अछि जे शेषक सुगमतासँ कल्पना भ' जाय।

विद्वान प्राध्यापक एवं प्रख्यात समालोचक डॉ॰ बासुकीनाथ झा लिखने छथि– "रस काव्यक वास्तविक विशेषता थिक। काव्यक रसानुभव लौकिक अनुभव नहि, श्रवण आ दर्शनसँ सहृदयक (पाठक, श्रोता अथवा दर्शकक) हृदयमे जे कलात्मक, अलौकिक एवं चमत्कारी आनन्दक आस्वाद होइत अछि, ओहि लोकोत्तर आनन्दकेँ साहित्यमे रसक संज्ञा देल जाइत अछि।"[10]

वीर–रस :– अधिकांश विद्वानक मानब छनि जे महाकविक वीर–रस प्रधान गीत नहिये जकाँ लिखने छथि। हिनक अवहट्‌ठ–रचनामे एहि रसक निर्वाह कयल गेल अछि। किछु विद्वान हिनक देवी–वन्दना जे गोसाञुनिक गीत नामसँ प्रसिद्ध अछि, ओहिमे वीर–रसक आंशिक चित्रण स्वीकार कयने छथि–

"घन–घन घनन घुघुर कटि बाजए,
हन–हन कर तुअ काता।"[11]

रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा संकलित 'विद्यापति की पदावली' पोथीमे पदक भावार्थ विशेषमे कहल गेल अछि– "यह वीर–रस को साकार करनेवाला युद्धगीत जैसा है। भैरवी महाराज शिवसिंह की कुलदेवी थी। इसमें साभिप्राय शब्दों का सुंदर

प्रयोग हुआ है और सार्थक ध्वनि के अनुरूप– 'घन–घन घनन घुघुर' तथा 'हन–हन कर तुअ काता' जैसे शब्दों का कुशल प्रयोग किया गया है।"[12]

डॉ॰ बासुकीनाथ झा कहने छथि जे "विद्यापतिक पदावलीमे स्फुट रूपसँ वीर रसक पद उपलब्ध नहि होइत अछि। एकाध स्थलपर बसन्तक चित्रण विजयी राजाक रूपमे अछि किन्तु ओतए मूल रूपसँ रति स्थायी भाव अछि जाहिसँ वीर रसक परिपाक सम्भव नहि अछि।"[13]

'प्रेम–सौन्दर्य विधायक विद्यापति' पोथीक लेखक डॉ॰ वीरेन्द्र मल्लिक सेहो महाकविक अवहट्ठ रचना 'कीर्तिलता' एवं 'कीर्तिपताका'कँ ओजपूर्ण वीर–रससँ ओत–प्रोत रचना मानने छथि। प्रसिद्ध विद्वान, समालोचक, निबंधकार, इतिहासकार प्रो॰ (डॉ॰) देवकान्त झाक मानव छनि– "खाली पदावलिक आधारपर हुनका मात्र शृंगार आ भक्तिमे खुटेसब, घोर अन्याय थिक। विद्यापति सब रसी छलाह। निःसन्देह शृंगार रसराज थिक। तँ रससिद्ध विद्यापति ओकरा यथेष्ट मर्यादा देलनि अछि मुदा आनो रसमे ओ कम नहि छथि। विशेष रूपसँ वीर हुनक रचना–संसारक मुख्य भूमिपर प्रतिष्ठित अछि। कीर्तिलता आर पुरुष परीक्षामे वीर अंगी रस अछि। पदावलिक काली ओ दुर्गाक वन्दनामे वीरक धमक अछि। अन्यत्र अंग रूपसँ ई सब तरि कोनो ने कोनो रुपमे अपन रंग देखबिते अछि। रौद्र आ अद्‌भुत वीरक पोषक रुपमे आकर्षक अछि।"[14]

(3) हास्य रस :– हास्य रसक स्थायी भाव थिक – हास।

महाकवि विद्यापतिक पदमे ठाम–ठाम हास्य रसक वर्णन देखबामे आबैत अछि, विशेषतया 'नचारी' एवं महेशवाणी गीतमे। एक टा उदाहरण द्रष्टव्य थिकः–

"नारद तुम्बरु मर्घैल गाबथि आओर कतन नारी।
कौतुके कोबर कौसले कामिनि सबे सब देअ गारि।।
भन विद्यापति गौरी–परिनय कौतुक कहि न जाए।
साप पुफपफकारे नारि पहाड़लि बसन ठामे नड़ाए।।"[15]

'महेशवाणी' गीतक एकटा दोसर उदाहरण द्रष्टव्य थिकः–

"दोसर विधि पड़िचाँ, चढ़ि बैसला हे जखने दिगम्बर आइ।
लाजक लेल गौरि नहि आबए, सखि सब गेलि पड़ाई।।
माइ हे, माड़ब मञो नहि जाएबे जहाँ बस उमत जमाइ
पएर धेअए खने दूध पिउल पफनि, हर लागलि तसु चोरी।
सबे सबतहु करताल बजाबए, मधुर हाँसे हँस गोरि।"[16]

महाकवि विद्यापति हास्य गीत सभक रचना कएलन्हि अछि। एहि रसक गीत सभमे सर्वत्र शिष्ट हास्य दृष्टिगोचर होइत अछि।

(4) करुण रसः– एहि रसक स्थायी भाव थिक– शोक। भारतीय आचार्य लोकनि शृंगारक पश्चात करुणे–रसकँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानने छथि। आचार्य भवभूति 'करुण रस'कँ सभसँ महत्वपूर्ण रसक रूपमे स्वीकार कयने छथि। महाकवि विद्यापतिक गीतमे मरणजन्य शोकक चित्रण नहि देखबामे आबैत अछि मुदा अन्य प्रकारक गीतमे करुण रसक चित्रण कयल गेल अछि–

"हमसञो रुसल महेसे। गौरि विकल मन करथि उदेसे।

पुछिअ पथुक जन तोही। ए पथ देखल केहु बूढ़ बटोही।

आर्घै विभूति अनूपे। कतेक कहब हुनि जोगिक सरुपे।

विद्यापति भन ताही। हर लए गौरी भेलि बताही।"[17]

(5) रौद्र रसः– रौद्र रसक स्थायी भाव थिक क्रोध। महाकवि विद्यापतिक किछु गीत विशेषतया शाक्त भावनाक गीतमे रौद्र–रसक वर्णन देखबामे आबैत अछि।

"क्रुद्ध–सुर–रिपु–बल–निपातिनि

महिष शुम्भ–निशुम्भ–घाति

भीत–भक्तक–भयापनोदन–पाटव–प्रबले

जय देवि दुर्गे दुरित–तारिणी

दुर्गमारि–विमर्द–कारिणी।"[18]

(6) भयानक रस :– भयानक रसक स्थायी भाव थिक – भय। डॉ॰ बासुकीनाथ झा अपन 'विद्यापति काव्यालोचन' नामक पोथीमे स्पष्ट कयने छथि जे हिनक गीतमे भयानक रसक स्फुट उदाहरण उपलब्ध नहि होइत अछि। शिवभक्ति सम्बन्धी किछु पदमे भयानकसँ पुष्ट भक्तिक उदाहरण प्राप्त होइत अछि। हिनक गोसाञुनिक गीतक किछु अंशमे भयानक रसक सृष्टि देखबामे आबैत अछि जाहिमे महाकवि राक्षसकेँ भय प्रदान करयवाली हिनक रूपक वर्णन कयल अछि– "जय जय भैरवि असुर भयाउनि, पशुपति–भामिनी माया।"[19]

(7) वीभत्स रसः– वीभत्स रसक स्थायी भाव थिक – जुगुत्सा। डॉ॰ बासुकीनाथ झा अपन पोथीमे लिखने छथि जे पूर्णरूपसँ वीभत्स रसक निष्पत्ति विद्यापतिक कोनो पदमे वर्णित नहि अछि। मात्र एक पदमे वीभत्ससँ अनुप्राणित शिवक महिमाक प्रदर्शन करैत भक्तिक वर्णन भेल अछि–

आँखि निरर मुह चुअइ लार।

पथके चलत बौरा विसम्भार।।

बाट जाइते केहु हलव ढ़ेलि

अब ओहि बउरा बिनु मञो अकेलि।।

हाथ डँवरु करु लौआ साँख,

जोग–जुगुति गिम भरल (लाख)"[20]

ओना किछु विद्वान हिनक 'गोसाञुनिक गीत'मे सेहो एहि रसक आंशिक निर्वाह मानने छथि– "कट–कट विकट ओठ–पुट–पाँड़रि, लिधुर–फेन उठ फोका।"[21]

(8) अद्भुत रस :– अद्भुत रसक स्थायी भाव थिक – विस्मय। महाकवि विद्यापतिक शिवविषयक आ किछु शृंगारिक गीतमे अद्भुत रसक उपस्थापन देखबामे आबैत अछि–

"पंचवदन हर भसमे धवला। तीनि नयन एक बरए अनला।।

दुखे बोलए भवानी। जगत भिखारि मिलल हमर सामी।।

बिसधर भूखन, दिञ परिधना। बिनु बिते ई सर नाम उगना।"[22]

एक टा शृंगारिक गीतक उदाहरण द्रष्टव्य थिक जाहिमे कविकेँ विस्मय होइत छनि–

"कुचमण्डल–सिरि हेरि कनक–गिरि लाजे दिगन्तर गेल
केओ अइसन कह, सेहो न जुगुति सह अचल सचल कैसे भेल।
माझ खीन तनु भरे भार्घिं जाए जनु विधि अनुसए भेल साजि।
नील पटोर आनि अतिसए सुदिढ़ जानि जतने सिरिजु रोमराजि।"[23]

(9) शान्त–रस :– एकर स्थायी भाव 'निर्वेद' अथवा 'शम' होइत अछि। हिनक विनय गीत वा भक्ति गीत सभमे एहि रसक आकर्षक अभिव्यंजना भेल अछि–

"दुल्लहि तोहर कतए छथि माए। कहुन्ह ओ आबथु एखन नहाए।।
बृथा बुझथु संसार बिलास। पल पल नाना भौतिक त्रास।
माए बाप जओ सदगति पाब। सन्तति काँ अनुपम सुख जाब।
विद्यापतिक आयु अवसान। कातिक धवल त्र्योदसि जान।"[24]

शान्त–रससँ समन्वित एक टा दोसर पद द्रष्टव्य थिक–

"तातल सैकत वारि–बिन्दु सम, सुत मित–रमनि–समाजे।
तोहि बिसारि मन ताहि समरपल, अब मझु होब कोन काजे।
माधव, हम परिनाम निरासा।
तोंहे जगतारन दीन दयामय, अतए तोहर विसबासा।।"[25]

एतय जीवनक अनुभवसँ संसारक निःस्सारता देखाओल गेल अछि संगहि जीवनक अन्त समयमे चिन्ता भेलासँ भगवानक प्रति आत्म–समर्पणक भाव अछि। रसक स्वरूप आनन्दात्मक होइत अछि। विद्यापतिक युगसँ बहुत पूर्व रस काव्यक आत्माक रूपमे प्रतिष्ठित भ' गेल छल। तँ महाकवि विद्यापति ओही परम्पराक अनुसरण कयलनि आ विभिन्न रससँ सम्बन्धित गीतक रचना कयलनि।

संदर्भ :–

1. काव्य के तत्व, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, इलहाबाद, संस्करण 2003 ई॰, पृष्ठ संख्या–26
2. भविष्णु, लेखक–सम्पादक डॉ॰ रमण कुमार झा, शेखर प्रकाशन, पटना प्रथम संस्करण–2017 ई॰ पृष्ठ संख्या–16
3. तत्रैव, पृष्ठ–16
4. मैथिली काव्यशास्त्र – डॉ॰ दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी, पटना, द्वितीय संस्करण 2006 ई॰ पृष्ठ–96
5. तत्रैव, पृष्ठ–83
6. तत्रैव, पृष्ठ–83
7. तत्रैव, पृष्ठ–52
8. मैथिली काव्यशास्त्र – डॉ॰ दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी, पटना, द्वितीय संस्करण 2006 ई॰ पृष्ठ– 106
9. काव्य के तत्त्व, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण–2003 ई॰, पृष्ठ संख्या–29

10. विद्यापति काव्यालोचन, प्रो॰ (डॉ॰) बासुकीनाथ झा मैथिली अकादमी, पटना (बिहार), द्वितीय संस्करण 2018 ई॰, पृष्ठ संख्या–141
11. विद्यापति की पदावली, संकलन : श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, संपादित : आचार्य राम लोचन शरण, पुस्तक भंडार पब्लिशिंग हाउस, पटना, पृष्ठ–43
12. तत्रैव, पृष्ठ–4
13. विद्यापति काव्यालोचन, प्रो॰ (डॉ॰) बासुकीनाथ झा मैथिली अकादमी, पटना (बिहार), द्वितीय संस्करण 2018 ई॰, पृष्ठ संख्या– 185
14. पौरुष ओ प्रतापक महाकवि विद्यापति आलेख रचनाकार–प्रो॰ (डॉ॰) देवकान्त झा, देसिल बयना, मैथिली साहित्य मंच, विद्यापति स्मृति गोष्ठी स्मारिका, नवम अर्घ्य हैदराबाद–सिकन्दराबाद, 25 नवम्बर, 2018, सम्पादक–चन्द्र मोहन कर्ण, पृष्ठ संख्या–28
15. विद्यापतिक गीतावली, सम्पादक–पं. श्री गोविन्द झा, मैथिली अकादमी, पटना, चतुर्थ संस्करण–2019 ई, पृष्ठ संख्या–13
16. तत्रैव, पृष्ठ–6
17. तत्रैव, पृष्ठ–13
18. तत्रैव, पृष्ठ–2
19. तत्रैव, पृष्ठ–1
20. तत्रैव, पृष्ठ–8
21. तत्रैव, पृष्ठ–1
22. तत्रैव, पृष्ठ–7
23. तत्रैव, पृष्ठ–22
24. विद्यापति की पदावली, संकलनः श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, संपादित–आचार्य रामलोचन शरण, पुस्तक भंडार पब्लिशिंग हाउस, पटना, पृष्ठ संख्या–144
25. तत्रैव, पृष्ठ–138